मैंडरिन बतख़ों की कहानी

मैंडरिन बतख़ों की कहानी

बहुत पुरानी बात है, जिस देश में सूर्योदय सबसे पहले होता है वहाँ बतख़ों का एक जोड़ा रहता था. नर-बतख़ शानदार पक्षी था और उसके पंख इतने सुंदर थे कि उनकी शोभा देखकर सम्राट को भी ईर्षा होने लगती. लेकिन उसकी मादा-बतख़ के पंख साधारण थे, लकड़ी के रंगों जैसे. पेड़ की जिस बिल में उन दोनों का घोंसला था, उस बिल में अपने रंग के कारण वह सरलता से छिप जाती थी.

एक दिन जब मादा-बतख़ अंडों पर बैठी थी, नर-बतख़ खाने की तलाश में उड़ कर नीचे तालाब में आ गया. जब वह तालाब में तैर रहा था तब एक शिकारी दल उस जंगल में आ गया. उन शिकारियों का नेतृत्व उस प्रदेश का सामंत कर रहा था, जो एक घमंडी और निर्दयी व्यक्ति था. उसका विश्वास था कि प्रदेश की हर वस्तु का वह स्वामी था और हरेक के साथ मन-मर्ज़ी करने का उसका अधिकार था. अपने घर और बगीचे की सजावट के लिए वह सुंदर वस्तुओं की तलाश में रहता था. जब उसने तालाब में एक सुंदर नर-बतख़ को तैरते देखा तो उसने तय किया कि उसे पकड़ कर अपने घर ले जाएगा.

सामंत के मुख्य प्रबंधक, शाज़ो, ने अपने स्वामी को रोकने का प्रयास किया. "मेरे मालिक, यह नर-बतख़ एक जंगली प्राणी है," उसने कहा. "इसे बंधन में रखेंगे तो यह अवश्य मर जायेगा." लेकिन सामंत ने उसकी बात अनसुनी कर दी. मन ही मन वह शाज़ो से घृणा करता था. यद्यपि शाज़ो कभी सबसे शक्तिशाली योद्धा था, पर एक लड़ाई में उसने अपनी एक आँख गंवा दी थी और अब वह बिलकुल सुंदर दिखाई न देता था.

सामंत ने अपने आदमियों से कहा कि झाड़ियाँ काट कर तालाब तक एक पतला रास्ता बना दें और उस रास्ते पर जगह-जगह बलूत के बीज रख दें. जब नर-बतख़ पानी से बाहर आया तो उसने बलूत के बीज देखे. वह कितना प्रसन्न हुआ! वह सतर्क रहना भूल गया. वह तो बस यही सोच रहा था कि इन बीजों को ले जाकर अपनी मादा के साथ बढ़िया दावत करेगा.

जैसे ही अपनी लाल चोंच से वह एक बीज उठाने लगा, एक जाल उसके ऊपर आ गिरा. डरे हुए पक्षी को उठा कर सामंत के आदमी हवेली में ले आये और उसे बांस के बने एक पिंजरे में बंद कर दिया.
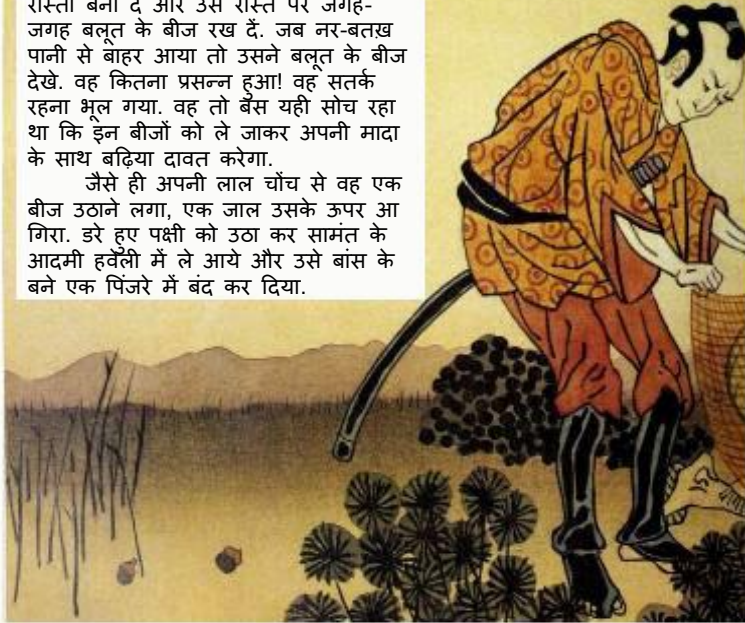
अपने नए पालतू जीव को पाकर सामंत बहुत प्रसन्न था. उसने एक दावत का आयोजन करवाया और दूर-दूर से धनी ज़मींदारों को निमंत्रण दिया. उन सब को वह नर-बतख़ दिखाना चाहता था और उसके सुंदर पंखों की शोभा का बखान करना चाहता था, और सच में नर-बतख़ के पंख सबसे सुंदर बूटेदार वस्त्र से भी अधिक सुंदर थे.

लेकिन नर-बतख़ तो सिर्फ अपनी मादा की चिंता कर रहा था, जो अकेली ही अंडों पर बैठी थी. उसे कोई जानकारी न थी कि उसके साथी के साथ क्या हुआ था.

जैसे-जैसे दिन बीतने लगे नर-बतख़ निराश होता गया. उसके सुंदर पंखों की शोभा घटने लगी. उसकी गर्वीली, कर्कश आवाज़ भी धीरे-धीरे धीमी पड़ने लगी और फिर एक दिन वह पूरी तरह चुप हो गया. रसोई की नौकरानी उसके लिए कितने ही स्वादिष्ट व्यंजन क्यों न लाती, वह खाने से इंकार कर देता. 'वह अपनी मादा के लिये दुःखी है', उस लड़की ने सोचा, क्योंकि वह जंगली जीवों के विषय में बहुत कुछ जानती थी.
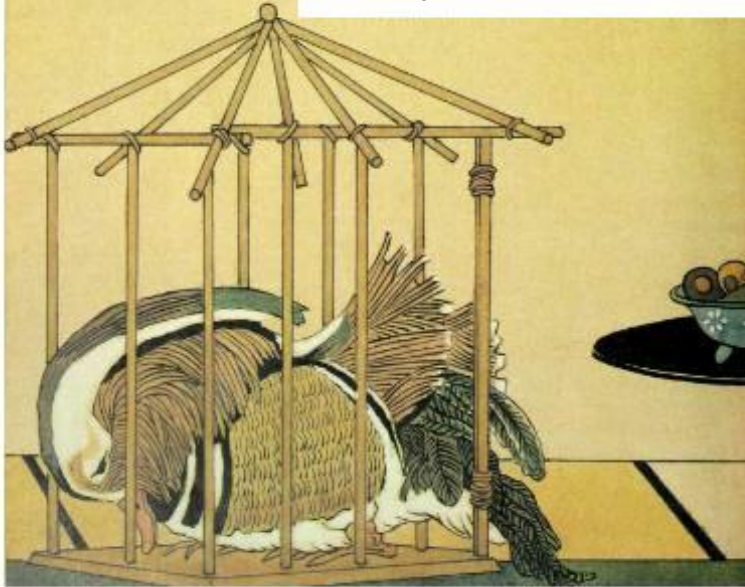
सामंत को कोई वस्तु तब तक ही अच्छी लगती थी जब तक वह सुंदर होती थी और उसका गौरव बढ़ाती थी. इसलिये जब उसने देखा कि नर-बतख़ बीमार पड़ गया था तो उसे गुस्सा आ गया."शायद हमें इसे छोड़ देना चाहिये," शाज़ो ने सुझाव दिया, "क्योंकि अब वह आपके किसी काम का नहीं रहा, मेरे मालिक." लेकिन किसी आदमी का उसे बताना कि उसे क्या करना चाहिये, सामंत को अच्छा न लगता था और एक-आँख वाले नौकर की बात तो उसे बिलकुल पसंद न थी. सामंत ने बतख़ को छोड़ने से मना कर दिया और आदेश दिया कि पिंजरा उसकी नज़रों से दूर हटा दिया जाए ताकि उस दुःखी बतख़ को देख कर उसे गुस्सा न आ जाए.

जब यासुको, रसोई में काम करने वाली उस नौकरानी का यही नाम था, ने देखा कि बतख़ के पिंजरे को बगीचे के सबसे दूर वाले कोने में रख दिया गया है तो उसने उस पक्षी की जान बचाने का निश्चय किया. एक अंधियारी रात जब आकाश में चाँद भी नहीं था, बिना शोर किये वह बगीचे में आई. उसने बड़ी सावधानी के साथ पिंजरे का दरवाज़ा खोला और कोमलता से पक्षी को उठा लिया. चूँकि पक्षी इतना दुर्बल था कि वह उड़ न सकता था, वह उठा कर उसे जंगल के किनारे तक ले आई और उसे ज़मीन पर रख दिया. बतख़ ने अपने-आप को एक बार झकझोरा, वह लड़की की ओर घूमा जैसे की उसका अभिनंदन कर रहा हो, और फिर रात के अँधेरे में वह लुप्त हो गया.

हर बड़े घर में कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जिन्हें दूसरों को परेशान करने में बड़ा आनंद मिलता है. इस कारण दुपहर होने से पहले ही सामंत को पता लग गया कि नर-बतख़ गायब हो गया था. हालाँकि सामंत की उसमें अब कोई रूचि न थी फिर भी यह सोच कर कि किसी और ने उसकी वस्तु ले लेने का साहस किया था, वह आगबबुला हो गया. उसने तुरंत शाज़ो को बुलाया. “तुम ने मेरा नर-बतख़ क्यों चुराया?” उसने गुस्से से पूछा.

शाज़ो गर्दन नीची किये चुपचाप खड़ा रहा. उसने अपने बचाव में कुछ भी न कहा. यद्यपि उसने बतख़ नहीं चुराया था, उस बतख़ को छोड़ देने का विचार कई बार उसके मन में आया था. वह इतना निष्कपट आदमी था कि उसके लिए पक्षी को छोड़ने की इच्छा करना, पक्षी को सच में छोड़ने समान ही था.

सामंत ने आदेश दिया कि शाज़ो की खूब पिटाई की जाए और उसका पद उससे छीन लिया जाए. यद्यपि शाज़ो कभी एक शूरवीर योद्धा था और सामंत के बाद वह दूसरे स्थान पर था, अब उसे कचड़ा उठाने और प्रसाधन-कक्षों की सफाई का काम दिया गया.

जब यासुको ने देखा कि शाज़ो को किस तरह अपमानित किया गया था तब उसने उसे सच बता दिया. उसने शाज़ो से निवेदन किया कि उसे अपना अपराध स्वीकार करने दे. लेकिन शाज़ो ने ऐसा करने से उसे रोक दिया. "एक अपराध के लिये दो लोग क्यों सज़ा पायें?" उसने यासुको से कहा. लेकिन यासुको का उसके लिये दुःखी होना उसे अच्छा भी लगा.
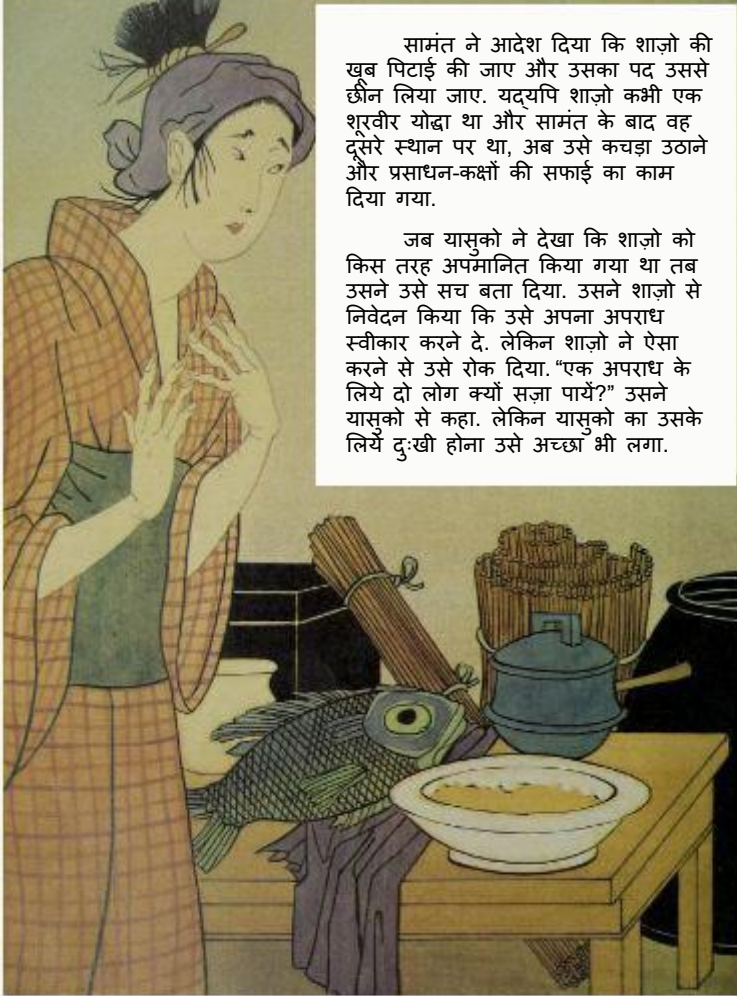
जैसे-जैसे दिन बीते, यासुको और शाज़ो एक दूसरे से प्यार करने लगे. उनके प्यार ने उनके जीवन को खुशियों से भर दिया और अंततः वह दोनों अपने प्यार को छिपा कर न रख पाए. आखिरकार, जो व्यक्ति उन्हें दुःखी देखना चाहता था उसने सामंत को उनके प्यार की बात बता दी. सामंत ने यासुको और शाज़ो को बुला भेजा.

"मुझे समझ आ गया है," उसने कहा, " तुम दोनों ने मिलकर मेरा सुंदर नर-बतख़ चुराया था. अब तक मैं बहुत दयालु था. लेकिन मैं देख रहा हूँ कि तुम दोनों ने मेरी कृपा का बहुत अनुचित लाभ उठाया है. जो लोग मेरी इच्छा के विरुद्ध जाना चाहते हैं उन्हें चेतावनी देने के लिये मैं तुम दोनों को कठोर सज़ा देकर एक उदाहरण बनाऊंगा. मैं तुम्हें मृत्युदंड देता हूँ. तुम दोनों को पानी में डुबो कर मारा जायेगा."

चूँकि सामंत के बोल ही उस प्रदेश का कानून था, उसका विरोध करने का कोई उपाय नहीं था. उसने अपने अनुचरों को बुलाया और अपराधियों के हाथ बंधवा दिये. दोनों को मृत्युदंड देने हेतु उनको तालाब की ओर ले जाने के लिए अनुचार तैयार थे.

पर जैसे ही वह तालाब की ओर जाने लगे, दो दूत सामंत के द्वार आ पहुंचे. दूतों की वेशभूषा से लग रहा था की वह प्रतिष्ठित व्यक्ति थे. "सम्राट ने हमें आपके पास भेजा है," उन्होंने सामंत से कहा. "दिव्य सम्राट ने सपने में कृपानिधान बुद्ध के दर्शन किये, जिन्होंने सम्राट को आदेश दिया कि सारे साम्राज्य में मृत्युदंड समाप्त कर दिया जाए. अगर आपके प्रदेश में कोई ऐसा ही जिसे मृत्युदंड दिया जाना है तो उस व्यक्ति को तुरंत सम्राट के सामने प्रस्तुत किया जाये."

यह आदेश सुन कर सामंत को बहुत गुस्सा आया, इतना गुस्सा कि वह शाही दूतों को ही मार डालता. लेकिन वह जानता था कि सम्राट का आदेश पालन करने के अतिरिक्त उसके पास कोई विकल्प न था. उसने अपने अनुचरों को हुक्म दिया कि दोनों अपराधियों कौ राजधानी ले जाएँ.
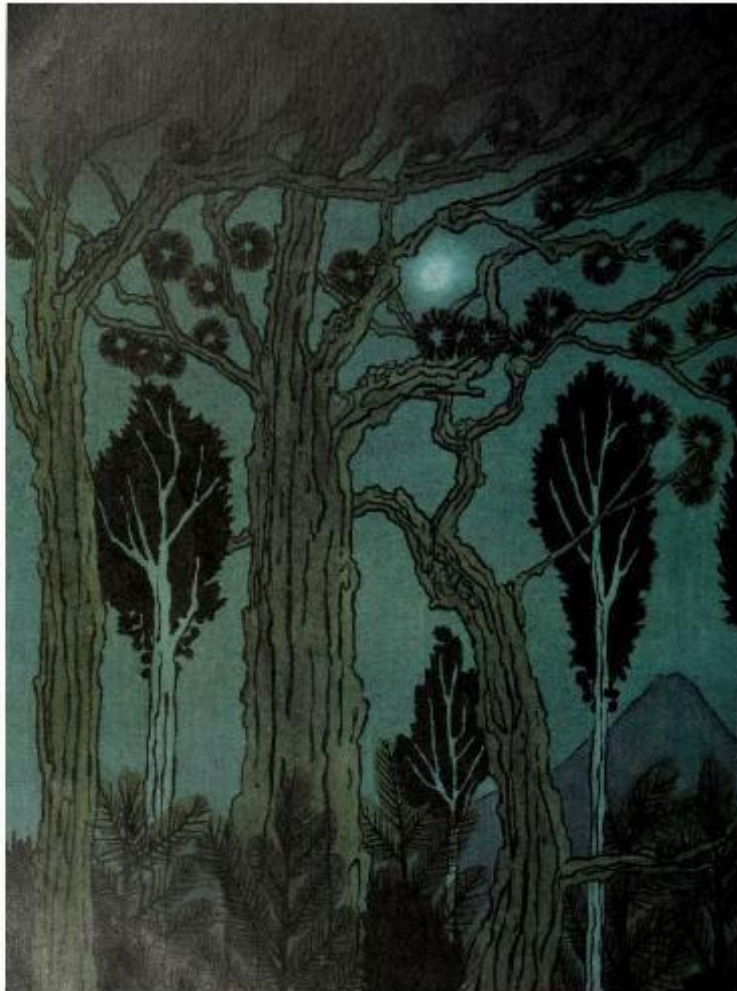
राजधानी पहुँचने के लिये पाँच दिन की यात्रा करनी पड़ती थी. दिन बीते और यासुको और शाज़ो थकावट से सुस्त पड़ने लगे. तीसरे दिन की समाप्ति तक, जब वह एक घने जंगल के बीच में थे, दुःखी जोड़ा इतना थक गया था कि एक कदम चलना भी उनके लिये असंभव हो गया था. बेसब्र पहरेदार उन पर चिल्लाने लगे और झटपट साथ-साथ चलने को कहने लगे. लेकिन सत्य तो यह था की वह लोग उस भयानक जंगल से डरे हुए थे.

जैसे ही रात हुई, अँधेरा और घना हो गया. यासुको और शाज़ो को कुछ दिखाई न दे रहा था. जल्दी ही उन्हें पता चल गया कि पहरेदार उन्हें छोड़ कर आगे जा चुके थे. अब उस डरावने जंगल के बीच में वह नितांत अकेले थे, बिना खाने और पानी के.

उस अँधेरे में उन्होंने टटोलते हुए आगे बढ़ने का प्रयास किया पर शीघ्र ही वह जंगल में भटक गये. “अह!” यासुको बोली, “देखो मैं क्या कर बैठी. अगर मैंने मूर्खता न की होती तो इस समय हम हवेली में सुरक्षित और आराम से होते.”
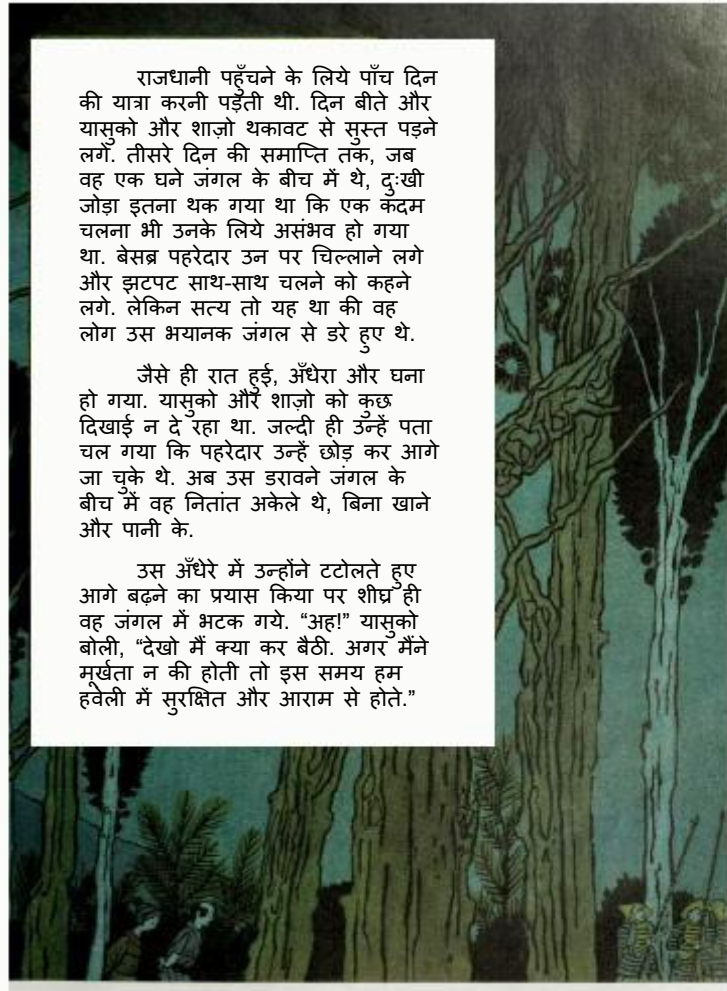
"ऐसे मत कहो," शाज़ो ने कहा, "किसी जीव पर दया करना मूर्खता नहीं होती. और हमारे पुराने स्वामी की क्रूरता के मुकाबले में इस जंगल का भय तो कुछ भी नहीं."

"काश, मेरे हाथ पीछे न बंधे होते," यासुको ने कहा. "मुझे लगता है कि अगर मैं तुम्हारा हाथ पकड़ पाती तो मुझे इतना डर न लगता."

"यहाँ आओ," शाज़ो बोला. "मेरे इतने निकट आकर खड़ी हो जाओ कि तुम्हारा कंधा मेरे कंधे को छूने लगे. फिर शायद इस अँधेरे में हमारे बिछुड़ने की संभावना नहीं रहेगी."

तभी उन्हें सरसराहट की आवाज़ सुनाई दी. दोनों पत्थर की मूर्तियों समान स्थिर खड़े हो गये और साहसी बनने की कोशिश करने लगे. "अहा," एक नम्र आवाज़ सुनाई दी, "हम ने तुम लोगों को ढूँढ ही लिया. डरो नहीं. हम तुम्हें वहाँ ले जायेंगे जहाँ तुम विश्राम कर पाओगे."

"आप कौन हैं जो हम से ऐसे बात कर रहे हैं?" शाज़ो ने पूछा. उसकी आवाज़ डरी, सहमी सी थी.

"हम सम्राट के दूत हैं," दूसरे न कहा, पर वह भी उस घने अँधेरे में दिखाई न दे रहा था.

यासुको और शाज़ो जानते थे कि उन्हें इस आदेश का पालन करना ही होगा, लेकिन फिर भी वह थोड़ा भयभीत थे. उस अंधियारी, काली रात में उन्हें कुछ दिखाई न दे रहा था. उसे अँधेरे में आगे चलते दूतों के रेशमी वस्त्रों की सरसराहट प्रेतरूपी आवाज़ लग रही थी. अंततः चारों जंगल के बीच एक खुली जगह पहुँच गये. वहाँ चाँदनी में लकड़ी और घास की बनी एक कुटिया दिखाई दी.

यासुको और शाज़ो को शाही दूत कुटिया के भीतर ले आये. सबसे पहले उन्होंने एक दीपक जलाया. फिर उन्होंने उन रस्सियों को खोला जिन से उनके हाथ उनके पीछे बंधे हुए थे. उन्होंने उनकी कलाइयों की हल्की सी मालिश की. फिर बारी-बारी से दोनों ने लकड़ी के एक टब में भरे साफ़, गर्म पानी से स्नान किया. जब यासुको और शाज़ो ने नए किमोनो पहन लिये तो बढ़िया भोजन उनके सामने सजा दिया गया.

दोनों नौकरों ने कृतज्ञतापूर्वक खाना खाया. वह इतने थके हुए थे कि उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि उस जंगल में इतने स्वादिष्ट भोजन का प्रबंध कैसे हुआ. भोजन करने के बाद फर्श पर उनके लिए गद्दे बिछा दिए गये. गर्म रजाइयाँ ओढ़ कर वह तुरंत सो गये.

एक लोहे के बर्तन में उबलते चावल और बीन सूप की सुगंध ने यासुको और शाज़ो को सुबह-सुबह ही उठा दिया. लेकिन शाही दूत उन्हें वहाँ दिखाई न दिए. “उनकी अनुकंपा के लिए हम उन्हें धन्यवाद भी न कह सके,” यासुको बोली. दोनों कूद कर उठे और बाहर दरवाज़े की ओर दौड़े.

बाहर रास्ते पर मैंडरिन बतखों का एक जोड़ा था. नर-बतख़ शानदार पक्षी था और उसके पंख इतने सुंदर थे कि उन पंखों की शोभा देखकर सम्राट को भी ईर्षा होने लगती. लेकिन उसकी मादा-बतख़ के पंख साधारण, लकड़ी के रंगों जैसे थे. बतखें उनकी ओर घूमी और ऐसा लगा कि वह झुक कर उनका अभिवादन कर रही थीं. फिर पेड़ों के ऊपर, तीरों के समान सीधे और तेज़ी से उड़ते हुए वह दूर चले गये.

यासुको और शाज़ो कई वर्षों तक अपनी लकड़ी और घास की बनी कुटिया में रहे. उनके कई बच्चे हुए, जो ढेर सारी ख़ुशी और थोड़ा-थोड़ा कष्ट उन्हें देते थे. लेकिन दोनों ने बहुत वर्षों पहले ही सीख लिया था कि कष्ट अगर बाँट लिए जाएँ तो उन्हें सहना सरल होता है.

समाप्त